अध्याय 18

महाजनपदकालीन भारत एवं मगध साम्राज्य

प्रारम्भ में लोग कबीले के रूप में निवास करते थे। जन समूह या कबीला जितने भू–भाग पर रहता था, वह भाग जनपद कहलाया।

जनपद का अर्थ है जनों का अर्थात् मनुष्यों का निवास स्थान

इन जनपदों की अपनी शासन और कानून व्यवस्था होती थी। इनमें से कुछ जनपद राजतंत्रात्मक थे व कुछ जनपद गणतंत्रात्मक थे।

महाजनपद

करीब 2500 साल पहले, कुछ जनपद अधिक महत्वपूर्ण हो गए। ऐसे महत्वपूर्ण एवं बड़े जनपदों ने छोटे जनपदों को अपने राज्य में मिला लिया। इस प्रकार महाजनपद बन गए। प्रत्येक महाजनपद की अपनी–अपनी राजधानी होती थी। कई राजधानियों में किलेबन्दी भी की गई थी।

महाजनपद के शासक नियमित सेना रखने लगे थे। सिपाहियों को वेतन देकर पूरे साल रखा जाता था। कुछ भुगतान सम्भवतः आहत सिक्कों के रूप में होता था। इन महाजनपदों की संख्या सोलह थी।

सोलह महाजनपदों की सर्वप्रथम जानकारी बौद्ध ग्रन्थ अंगुत्तर निकाय में मिलती है।

आहत सिक्के

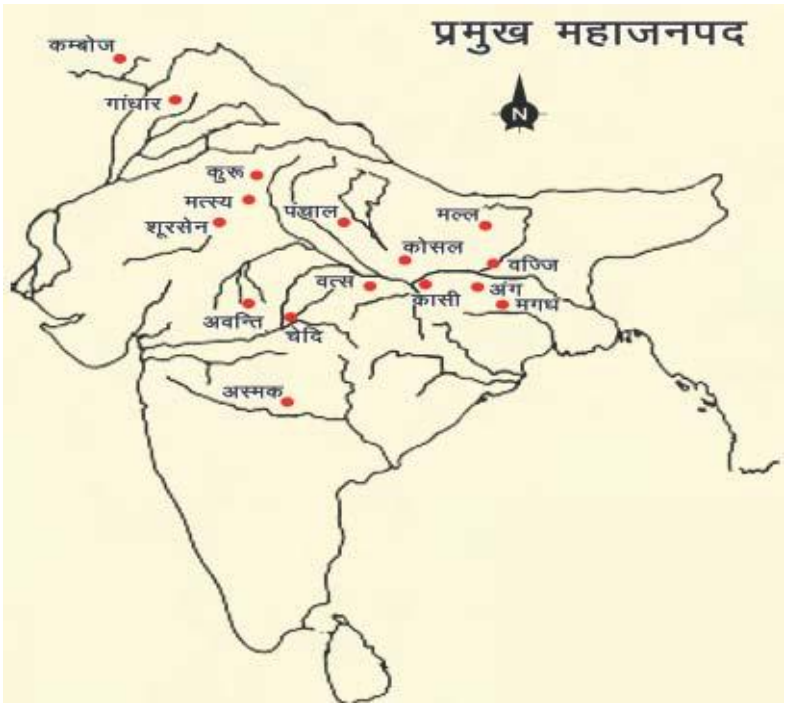

मानचित्र पैमाने के आधार पर नहीं है।

सोलह महाजनपद पदों का विवरण

क्र. स.	महाजनपद का नाम	महाजनपद की राजधानी	वर्तमान शहर या स्थान जहाँ ये महाजनपद थे
1.	अंग	चम्पा	बिहार के मुंगेर –भागलपुर जिलों का क्षेत्र।
2.	मगध	पाटलिपुत्र	बिहार के गया और पटना जिलों का क्षेत्र।
3.	काशी	वाराणसी	उत्तर प्रदेश के वर्तमान के वाराणसी और उसके आसपास का क्षेत्र।
4.	कौशल	श्रावस्ती	उत्तर प्रदेश के अवध के अयोध्या फैजाबाद का क्षेत्र।
5.	वज्जि	वैशाली	गंगा नदी के उत्तर में नेपाल की पहाड़ियों तक बिहार में वैशाली का क्षेत्र।
6.	मल्ल	कुशीनारा, पावा	बिहार के पटना जिले के पास कुशीनगर एवं पावा क्षेत्र में फैला था एवं उत्तरप्रदेश के गोरखपुर एवं देवरिया जिले में।
7.	चेदि	शक्तिमती	यमुना के किनारे बुन्देल खण्ड एवं झांसी का क्षेत्र।
8.	वत्स	कौशाम्बी	उत्तरप्रदेश में इलाहाबाद का क्षेत्र।
9.	कुरु	इन्द्रप्रस्थ	दिल्ली, मेरठ और गाजियाबाद के आसपास का क्षेत्र ।
10.	पांचाल	अहिच्छत्रं, कांम्पिल्य	गंगा–यमुना के मध्य में रुहेलखण्ड, रायपुर–बरेली बदायुँ एवं फर्रुखाबाद जिले।
11.	मत्स्य	विराटनगर	राजस्थान का जयपुर, भरतपुर, और अलवर का क्षेत्र।
12.	शूरसेन	मथुरा	उत्तरप्रदेश के मथुरा, वृन्दावन एवं आसपास का क्षेत्र।
13.	अश्मक	पोतन	दक्षिण में गोदावरी नदी के तट पर फैला दोनों ओर का क्षेत्र।
14.	अवन्ति	उज्जयिनी, महिषमती	मध्यप्रदेश के उज्जैन एवं नर्मदा घाटी का क्षेत्र।
15.	कम्बोज	राजपुर	जम्मू कश्मीर, अफगानिस्तान एवं पाकिस्तान तक फैला था।
16.	गान्धार	तक्षशिला	पूर्वी अफगानिस्तान, जिसमें कश्मीर घाटी एवं तक्षशिला का भू–भाग सम्मिलित है।

प्रमुख महाजनपद

1. **मत्स्यः–** इस राज्य का विस्तार आधुनिक राजस्थान के अलवर जिले से चम्बल नदी तक था। इसकी राजधानी विराटनगर (जयपुर से अलवर जाने वाले मार्ग पर स्थित, वर्तमान नाम बैराठ) थी। महाभारत के अनुसार पाण्डवों ने यहाँ अपना अज्ञातवास का समय बिताया था।
2. **काशीः–** कई बौद्ध जातक कथाओं में इस राज्य की शक्ति और उसकी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं के बारे में चर्चा हुई है। यह संभवतः प्रारम्भ में महाजनपद काल का सर्वाधिक शक्तिशाली राज्य था। इसकी राजधानी वाराणसी थी,जो अपने वैभव ज्ञान एवं शिल्प के लिए बहुत प्रसिद्ध थी। महाजनपद काल का अन्त होते–होते यह कोसल राज्य में विलीन हो गया।
3. **कोसलः–** इस राज्य का भू विस्तार आधुनिक उत्तरप्रदेश के अवध क्षेत्र में था। रामायण में इसकी राजधानी अयोध्या बतायी गई है। प्राचीन काल में दिलीप, रघु, दशरथ और श्रीराम आदि सूर्यवंशीय शासकों ने इस पर शासन किया था। बौद्ध ग्रन्थों में इसकी राजधानी श्रावस्ती कही गई है। बुद्ध के समय यह चार शक्तिशाली राजतन्त्रों में से एक था।

4. **अंगः**— यह राज्य मगध के पश्चिम में स्थित था। इनमें आधुनिक बिहार के मुंगेर और भागलपुर जिले सम्मिलित थे। मगध व अंग राज्यों के बीच चम्पा नदी बहती थी। चम्पा इसकी राजधानी का भी नाम था। यह उस काल के व्यापार एवं सभ्यता का प्रसिद्ध केन्द्र था। अंग और मगध के मध्य निरन्तर संघर्ष हुआ करते थे। अन्त में यह मगध में विलीन हो गया।
5. **मगधः**— इस राज्य का अधिकार क्षेत्र मोटे तौर पर आधुनिक बिहार के पटना और गया जिलों के भू प्रदेश पर था। इसकी प्राचीनतम राजधानी गिरिव्रज थी। बाद में राजगृह व पाटली पुत्र राजधानी बनी। प्रारम्भ में यह एक छोटा राज्य था, पर इसकी शक्ति में निरन्तर विकास होता गया। बुद्ध के काल में यह चार शक्तिशाली राजतन्त्रों में से एक था।
6. **वज्जिः**— यह राज्य गंगा नदी के उत्तर में नेपाल की पहाड़ियों तक विस्तृत था। पश्चिम में गण्डक नदी इसकी सीमा बनाती थी और पूर्व में संभवतः इसका विस्तार कोसी और महानन्दा नदियों के तटवर्ती जंगलों तक था। यह एक संघात्मक गणराज्य था, जो आठ कुलों से बना था। इसकी राजधानी वैशाली थी। बुद्ध और महावीर के काल में यह एक अत्यन्त शक्तिशाली गणराज्य था। बाद में मगध के शासक ने इसे अपने राज्य का एक प्रदेश बना दिया।
7. **मल्लः**— यह भी एक गणराज्य था। यह दो भागों में बँटा हुआ था। एक की राजधानी कुशीनारा (वर्तमान उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले में आधुनिक कुशीनगर) और दूसरे की पावा थी। मल्ल लोग अपने साहस तथा युद्धप्रियता के लिए विख्यात थे। मल्ल राज्य अन्ततः मगध द्वारा जीत लिया गया।
8. **चेदिः**— यह राज्य आधुनिक बुन्देलखण्ड के पश्चिमी भाग में स्थित था। इसकी राजधानी शक्तिमती थी, जिसे बौद्ध साक्ष्य में सोत्थवती कहा गया है। चेदि लोगों का उल्लेख ऋग्वेद में भी मिलता है। महाभारत में यहाँ के राजा शिशुपाल का उल्लेख है, जिसके शासनकाल में इस राज्य ने बहुत उन्नति की। इसी समय इस वंश की एक शाखा कलिंग में स्थापित हुई।
9. **वत्सः**— यह राज्य गंगा नदी के दक्षिण में और काशी व कोसल के पश्चिम में स्थित था और इसकी राजधानी कौशाम्बी थी, जो व्यापार का एक प्रसिद्ध केन्द्र थी। कौशाम्बी इलाहाबाद से लगभग 48 किमी की दूरी पर है। बुद्ध के समय यहाँ का राजा उदयन था, जो बड़ा शक्तिशाली व पराक्रमी था। उसकी मृत्यु के बाद मगध ने इस राज्य को हड़प लिया। वत्स का राज्य भी बुद्ध के समय चार प्रमुख राजतन्त्रों में से एक था।
10. **कुरूः**— इस राज्य में आधुनिक दिल्ली के आस–पास के प्रदेश थे। इसकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ थी, जिसकी स्मृति आज भी दिल्ली के निकट इन्द्रप्रस्थ गाँव में सुरक्षित मिलती है। यह महाभारत काल का एक प्रसिद्ध राज्य था। हस्तिनापुर इस राज्य का एक अन्य प्रसिद्ध नगर था।
11. **पांचालः**— इस महाजनपद का विस्तार (आधुनिक बदायूँ और फर्रूखाबाद के जिले) रोहिलखण्ड और मध्य दोआब में था। यह दो भागों में विभक्त था– उत्तरी पांचाल और दक्षिणी पांचाल। उत्तरी पांचाल की

राजधानी अहिच्छत्र और दक्षिणी पांचाल की राजधानी कांपिल्य थी। यहाँ गणतंत्रीय व्यवस्था कायम थी।

12. **शूरसेनः–** इस जनपद की राजधानी मथुरा थी। महाभारत तथा पुराणों में यहाँ के राजवंशों को यदु अथवा यादव कहा गया है। इसी राजवंश की यादव शाखा में श्रीकृष्ण उत्पन्न हुए।

13. **अश्मक :–** यह राज्य दक्षिण में गोदावरी नदी के तट पर स्थित था। इसकी राजधानी पोतलि अथवा पोदन थी। बाद में अवन्ति ने इसे अपने राज्य में मिला लिया।

14. **अवन्ति :–** इस राज्य के अन्तर्गत वर्तमान उज्जैन का भू प्रदेश तथा नर्मदा घाटी का कुछ भाग आता था। यह राज्य भी दो भागों में बँटा था। उत्तरी भाग की राजधानी उज्जैन थी और दक्षिणी भाग की राजधानी महिष्मति थी। बुद्धकालीन चार शक्तिशाली राजतन्त्रों में से एक यह भी था। बाद में यह मगध राज्य में सम्मिलित कर लिया गया।

15. **गांधार :–** यह राज्य (वर्तमान पाकिस्तान के पेशावर तथा रावलपिंडी के जिले) पूर्वी अफगानिस्तान में स्थित था। इस राज्य में कश्मीर घाटी तथा प्राचीन तक्षशिला का भू प्रदेश भी आता था। इसकी राजधानी तक्षशिला थी। तक्षशिला का विश्वविद्यालय उस समय शिक्षा का प्रसिद्ध केन्द्र था।

16. **कम्बोज :–** इसका उल्लेख सदैव गान्धार के साथ हुआ है। अतः यह महाजनपद गान्धार राज्य से सटे हुए भारत के पश्चिमोत्तर भाग (कश्मीर का उत्तरी भाग, पामीर तथा बदख्शा के प्रदेश) में स्थित रहा होगा। राजपुर और द्वारका इस राज्य के दो प्रमुख नगर थे। यह पहले एक राजतंत्र था, किन्तु बाद में गणतंत्र बन गया।

महाजनपदों की शासन व्यवस्था

महाजनपदों में राजतन्त्रात्मक एवं गणतंत्रात्मक दोनों प्रकार की शासन व्यवस्थाओं का प्रचलन था। दोनों में मुख्य अन्तर यह था कि यहाँ राजतन्त्रात्मक शासन में शासन की सम्पूर्ण शक्ति एक व्यक्ति के हाथ में निहित होती थी और वंशानुगत शासन होता था, वहीं गणराज्यों में प्रशासन गण या समूह द्वारा संचालित होता था, जिसके प्रतिनिधि जनता से निर्वाचित होते थे।

राजा– राजा को संभवतः गणपति कहा जाता था। कुछ महाजनपदों में उसे राजा भी कहते थे। वह निर्वाचित किया जाता था। राजा अपने राज्य के लोगों की भलाई के लिए कार्य करता था।

मन्त्रिपरिषद्– यह परिषद् गणपति को शासन चलाने में सलाह देती थी। शासन की सबसे महत्त्वपूर्ण इकाई मन्त्रिपरिषद् मानी जाती थी।

परिषद्– यह वर्तमान लोकसभा के समान होती थी। गणपति और मन्त्रिपरिषद् शासन के बारे में परिषद् को जानकारी देते थे। परिषद् के सदस्यों का चुनाव जनता करती थी और यहीं पर गणपति और मन्त्रिपरिषद् के सदस्य बैठते थे।

सेना व पुलिस– गणराज्य की रक्षा के लिए सेना और सेनापति होता था। युद्ध के समय जनता सेना का साथ देती थी। बड़े–बड़े नगरों एवं राजधानी की देखभाल के लिए पुलिस व्यवस्था भी थी।

न्याय– गणराज्य में न्याय की अच्छी व्यवस्था थी। नीचे स्तर के न्यायालय द्वारा किसी को अपराधी

घोषित किये जाने पर अपने से ऊपर के न्यायालय में भेजा जाता था तथा निर्दोष पाए जाने पर छोड़ दिया जाता था। राजा न्याय का सर्वोच्च अधिकारी होता था, जो सभी न्यायालयों द्वारा अपराधी बताए जाने के बाद ही दण्ड देता था।

कर एवं आय–व्यय– महाजनपदों के राजा विशाल किले बनाते थे और बड़ी सेना रखते थे, इसलिए इन्हें प्रचुर संसाधनों एवं कर्मचारियों की आवश्यकता होती थी। अतः महाजनपदों के राजा लोगों द्वारा समय–समय पर लाए गए उपहारों पर निर्भर न रहकर अब नियमित रूप से कर वसूलने लगे। कृषि, व्यापार और व्यवसाय से कर लिया जाता था। वनों और खदानों से होने वाली आय राज्य की होती थी, इससे मन्त्रिपरिषद, सेना और पुलिस का खर्च चलाया जाता था।

समकालीन बौद्ध एवं जैन साहित्यिक स्रोतों के आधार पर जानकारी मिलती है कि भारतीय इतिहास में छठी शताब्दी ई.पू. को एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तनकारी काल माना जाता है। इस काल में प्रायः आरम्भिक राज्यों को नगरों, लोहे का प्रयोग और सिक्कों के विकास के साथ जोड़ा जाता है। इसी काल में बौद्ध तथा जैन सहित विभिन्न दार्शनिक विचारधाराओं का भी विकास हुआ है।

गतिविधि–

बौद्ध और जैन धर्म के बारे में जानकारी एकत्रित करें।

लगभग 700 ई.पू. तक लोहे का प्रयोग पहले से अधिक होने लगा था। इससे बनाए जाने वाले औजारों से कृषि तथा अन्य उत्पादन के साधनों में प्रगति हुई। यही वह समय था, जब गंगा और यमुना नदी के तट पर अनेक प्रमुख शहर बसे। इन शहरों में से इन्द्रप्रस्थ, हस्तिनापुर, कौशाम्बी तथा बनारस आज भी प्रसिद्ध नगरों में गिने जाते हैं।

सोचें एवं बताएँ–

1. लोहे के प्रयोग का कृषि उत्पादन पर क्या प्रभाव पड़ा होगा ?
2. कृषि उत्पादन बढ़ने से नगरों का विकास कैसे हुआ होगा ?

गंगा नदी के आसपास इतने सारे शहरों के होने का भी कारण था। गंगा नदी स्वयं ही एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक मार्ग थी और इसके द्वारा समुद्र तक पहुँचना भी संभव था। दूसरे, गंगा घाटी का जो इलाका था, वहाँ पास में ही लौह अयस्क काफी मात्रा में मिलता था। इसका फायदा उठाकर कुछ महाजनपदों ने अपना प्रभाव बहुत बढ़ाया। इनमें से एक मगध इतना बड़ा हो गया कि उसके विस्तार को 'साम्राज्य' का दर्जा दिया जाता है। यह कैसे हुआ और किस तरह हुआ था, अगले अनुच्छेद में हम यह जानेंगे।

मगध साम्राज्य का उदय

छठी शताब्दी ई.पू. में भारत में 16 महाजनपद थे। इन 16 महाजनपदों में से मगध राजनीतिक, भौगोलिक और सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण था, जो अन्य महाजनपदों को अपने में विलीन कर भारत के प्रथम विशाल साम्राज्य के रूप में विकसित हुआ। छठी से चौथी शताब्दी ई.पू. में लगभग दो सौ साल के भीतर मगध

(आधुनिक बिहार) सबसे शक्तिशाली एवं महत्त्वपूर्ण महाजनपद बन गया।

मगध की महत्ता के कारण–

1. मगध के कुछ हिस्सों पर जंगल थे, जहाँ हाथियों को पकड़ा जा सकता था। हाथी सेना के महत्त्वपूर्ण अंग थे।
2. मगध चारों ओर से गंगा और सोन जैसी नदियों से घिरा हुआ था। ये नदियाँ जल यातायात, जल आपूर्ति तथा भूमि के उपजाऊपन के लिए महत्त्वपूर्ण थी। मगध क्षेत्र में खेती की उपज अच्छी होती थी। आवागमन सस्ता और सुलभ होता था।
3. मगध में लोह खनिज के भण्डार भी थे, जिनसे लोहा निकाल कर मजबूत औजारों और हथियारों का निर्माण किया जा सकता था।
4. मगध की प्रारम्भिक राजधानी गिरिव्रज थी। पहाड़ियों के बीच बसा गिरिव्रज एक किलेबन्द शहर था। बाद में मगध की राजधानी बनी। राजगृह एवं पाटलिपुत्र भी सामरिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थानों पर स्थित थे। राजगृह पाँच पर्वत श्रृंखलाओं से घिरा हुआ था, जहाँ किसी भी शत्रु के लिए पहुँचना दुष्कर था तो पाटलिपुत्र गंगा और सोन से आवृत्त थी। पर्याप्त साधनों के अभाव में इन्हें पारकर इन पर अधिकार करना सहज नहीं था।

मगध के प्रमुख शासकों के नाम

हर्यंक वंश	–	बिम्बिसार, अजातशत्रु
शिशुनाग वंश	–	शिशुनाग
नन्द वंश	–	महापद्मनन्द, घनानन्द

मगध साम्राज्य के उत्थान एवं समृद्धि में अजात शत्रु का बड़ा ही योगदान रहा। बाद में नन्द वंश के शासकों ने देश के लिए एक विशाल सेना संगठित कर व्यवस्थित शासन प्रणाली को जन्म दिया। उन्होंने पाटलिपुत्र को समस्त उत्तरी भारत का राजनीतिक केन्द्र बना दिया।

पाटलिपुत्र शीघ्र ही न केवल राजनीति का वरन् शिक्षा व संस्कृति का भी केन्द्र बन गया। नन्द राजाओं ने माप–तौल की नई प्रणाली भी चलाई। मगध साम्राज्य का इतना उत्थान हुआ कि लगभग एक हजार वर्ष तक मगध एक साम्राज्य के रूप में महत्त्वपूर्ण बना रहा। इसी की नींव पर आगे चल कर मौर्य साम्राज्य की स्थापना हुई।

यूनानी (ग्रीक) प्रमाणों से भी जानकारी मिलती है कि नन्द राजा का एक विस्तृत राज्य था, जिसमें कहा गया है कि सिकन्दर के समय में व्यास नदी के आगे की शक्तिशाली जातियाँ एक साम्राज्य के अधीन थी और उसकी राजधानी पाटलिपुत्र थी। नंदों के पास एक बहुत बड़ा कोष था साथ ही एक विशाल सेना थी, जिनसे भयभीत होकर सिकन्दर की सेना ने व्यास नदी से आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया था।

नंद वंश के शासकों ने धन संचय करने और विशाल सेना को रखने के लिए अत्यधिक कर लगाए।

करों का बोझ अधिक होने से प्रजा राजा को घृणा की दृष्टि से देखती थी। परिणाम स्वरूप असन्तुष्ट वर्ग ने चन्द्र गुप्त को अपना नेता बनाया, जिसने नंद वंश को समाप्त कर प्रसिद्ध मौर्य साम्राज्य की नींव डाली।

शब्दावली

आहत सिक्के	–	प्राचीन भारतीय मुद्रा
संचय	–	इकट्ठा करना
यूनानी	–	ग्रीक (यूनान) देश के निवासी

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न एक से चार तक के सही उत्तर कोष्ठक में लिखिए –

1. मत्स्य महाजनपद की राजधानी थी –
   (अ) विराटनगर (ब) वाराणसी (स) मथुरा (द) अयोध्या ( )
2. दक्षिणी भारत में स्थित महाजनपद था –
   (अ) मत्स्य (ब) शूरसेन (स) मगध (द) अश्मक ( )
3. सोलह महाजनपदों का सबसे पहले उल्लेख किस ग्रन्थ में मिलता है?
   (अ) अंगुत्तर निकाय (ब) त्रग्वेद (स) अथर्ववेद (द) उपनिषद् ( )
4. जनपद से क्या तात्पर्य है?
5. महाजनपद कैसे बने ?
6. महाभारत काल में राजस्थान में कौनसा महाजनपद स्थित था?
7. प्रमुख महाजनपदों के नाम लिखिए।
8. मगध के प्रमुख शासकों के नाम लिखिए।
9. महाजनपदों की शासन व्यवस्था पर टिप्पणी लिखिए।
10. मगध महाजनपद एक साम्राज्य कैसे बना ? विस्तृत रूप से बताइए।

गतिविधि–

1. महाजनपद कालीन भारत के मानचित्र में ऐसे शहरों को चिह्नित करें जो आज भी देखे जाते हैं ?
2. भारत के मानचित्र में सोलह महाजनपदों एवं इनकी राजधानियों को अंकित करें।
3. कक्षा में छात्रों के समूह बनाकर उन्हें महाजनपदों के नाम दें, फिर बताएँ कि वे कौन सा महाजनपद है?
4. वैदिक, बौद्ध व जैन साहित्य में से प्रेरक कहानियों का कक्षा में मंचन करवाएँ। ।